## Stroke is curable completely - If shown to doctor in Golden hours - Dr Nikhil Panpalia

Patient Pundlikrao Dhengale attended in emergency at 4 PM, 6<sup>th</sup> September at Devki Hospital with complains of inability to speak and weakness in right lower and upper limb. He had deviation of angle of mouth to right side along with impaired language; total duration of illness was one hour. Considering possibility of stroke, relatives were counseled and immediate MRI brain along with, necessary blood investigations were done.

MRI showed infarct (Clot) in brain. This is the time when damage to brain had started occurring and timely intervention will regain blood flow and patient can have less complication of illness. This fact was explained to relatives, pros & cons were discussed. Relatives gave consent for treatment after which drugs were administered which can reduce infarct (Clot) size.

Patient started showing remarkable recovery in just two hours. He was monitored in ICU overnight. In the morning weakness on right along with language disturbance had improved. He was ambulant independently and also could commute with people. This recover was only possible because he took medical aid in time. Golden hours of treating stroke is four and half hour beyond which thrombolysis is not indicated. In a data from stroke journal 10 % or more people survive and live independently after thrombolysis in stroke though few (1 in 40 cases) can bleed and have fatal outcomes.

Dr Nikhil who is director and neurophysician at Devki hospital mention that majority of patient and relatives do not know importance of time duration (Golden hours - four and half hour). Stroke is painless illness as against to heart attack where agony brings patient early.

Pundlikrao and similar patients are the example where modern medicine could cure his hemiplagia in 16 hours. This practice is recommended all over the world & practiced in metros and even in Akola. But only few patients reach in time because of lack of awareness.

In one survey, Dr Nikhil along with team Devki hospital, randomly interviewed floating crowd regarding their awareness in golden hours in stroke. Surprisingly out of 1000 volunteers only 10 were aware about reaching to hospital in Golden hours of stroke.

Dr Nikhil considers his responsibility to create awareness about this fact of attending hospital at the earliest after stroke. He had social presentations, article in news paper interviews in TV. But goal is far long, he wants to do this more aggressively to achieve his **mission to make society stroke disability free.** 

## (लकवा)स्ट्रोक से मुक्तता अब संभव है - यदि समय पर इलाज हो तो -

**डॉ निखिल पनपालिया** MD;DM मेंदु रोग विशेषज्ञ

रोगी पुंडलीकराव ढेंगाळेने आपात स्थिति में ६ दिसंबर दोपहर ४ बजे , बोलने में असमर्थता और दाएं हाथ और पैर में कमजोरी का अनुभव किया । उन्हें मुंह का एक कोना निचे की और जा रहा था, बीमारी की कुल अविध एक घंटे थी। लकवे की आशंका को देखते उन्हें तुरंत देवकी हॉस्पिटल में लाया गया। स्ट्रोक की संभावना को देखते हुए, रिश्तेदारों से बात की गई और तत्काल एमआरआई मस्तिष्क के साथ-साथ आवश्यक रक्त जांच की गई। एमआरआई में मस्तिष्क की रक्त वाहिका में खून की गुटली दिखाई दि, यह वह समय है जब रक्त का प्रवाह रुक जाता है,मस्तिष्क मे खून की गुटली से क्षति शुरू हो जाती है। इलाज से खून की गुटली को पिघला सकते है और रोगी सामान्य हो सकता है। इस तथ्य को ऐवम दवाइिक सीमाओ के बारेमे रिश्तेदारों को अवगत कराया और रिश्तेदारों ने दवा के लिए त्रंत सहमति दी।

दवा tPA निर्धारित के रूप में दि गयी । रोगी ने केवल दो घंटों में उल्लेखनीय सुधार दिखाया। रात भर आईसीयू में उसकी निगरानी की गई। सुबह वह अर्धांगवायु (Hemiplegia) से नब्बे प्रतिशत ठीक हो गया और रोगी ने दाहिने हाथ से भोजन लिया, रोगी जो पहले बिस्तर से उठ नहीं सकता था वह अब बिना किसी सहारे के चल रहा था। जादुई रिकवरी केवल इसलिए संभव हो पाई क्योंकि उन्होंने समय पर इलाज करवाया । सुनहरे 4.30 घंटे बहुत ही महत्वपूर्ण है इसके बाद मस्तिष्क को महत्वपूर्ण नुकसान हो जाता है। और फिर यह दवा उपयोगी नहीं होती । फिर रोगी को महीनों के लिए अर्धांगवायु (Hemiplagia) की पीड़ा का सामना करना पड़ता है । tPA दवाई लकवे के लिए कुछ रुग्णो मे संजीवनी साबुत हुई है

देवकी अस्पताल में डॉ निखिल जो देवकी हॉस्पिटल में निर्देशक है और मेंदु रोग विशेषज्ञ हैं, उनका कहना है कि मरीज और रिश्तेदारों में से अधिकांश को इस सुनहरे 4.3° घंटे का महत्व मालूम नहीं है। स्ट्रोक दर्द रहित बीमारी है जो हार्ट अटैक के विपरीत है जहा सीने में तीव्र वेदनाये होती है, जो मरीज को जल्दी अस्पताल ले आती है।

पुंडलीकराव और इसी तरह के मरीज़ ऐसे उदाहरण हैं जहाँ आधुनिक चिकित्सा 16 घंटों में उनके रक्तस्राव को ठीक कर सकती है। यह प्रणाली संपुर्ण विश्व मे प्रस्तापित हुई है ,भारत मे, महानगरों और यहां तक कि अकोला इसका लाभ मरीजो तक पहूचाया गया है। लेकिन जागरूकता की कमी के कारण कुछ ही मरीज समय पर पहुंच पाते हैं।

एक सर्वेक्षण में ,डॉ निखिल ने देवकी अस्पताल में आने वाले रोगियों के रिश्तेदारों से लकवा ग्रसित रोगी को जल्दी अस्पताल में लाने से होने वाले फायदों से संबंधित जानकारी हासिल करने की कोशिश की । अधिकांश माने १००० में से केवल १० व्यक्तियों को सुनहरे 4.3० घंटे का महत्व ,के बारे में जानकारी नहीं थी। यह विशाल अजागरूकता चिंता का विषय है चिंतनीय है

डॉ निखिल लकवा पीडित रुग्ण को जल्द से जल्द अस्पताल में भर्ती होने के इस तथ्य के बारे में जागरूकता पैदा करना अपनी जिम्मेदारी मानते हैं। इस विषय पर उन्होंने विविध सामाजिक समूह को जागरूक कराया , अख़बार में लेख लिखे, टी वि के माध्यम से अपनी बात समाज तक पहुंचाइ। लेकिन लक्ष्य बहुत लंबा है,।

वे समाज को स्ट्रोक मुक्त बनाने के अपने सपने को पूरा करने के लिए वे यह जागरूकता अभियान और अधिक तिव्र गति से करना चाहते है ताकि लकवे से होणे वाली विकलंगता कम से कम हो |

## लकवा (स्ट्रोक) पासून मुक्तता आता संभव- सुवर्णकाळात डॉक्टरांना दाखवले तर -

निखिल पनपलिया MD ; DM मेंदू रोग तज्ञ

रुग्ण पुंडलिकराव ढेंगाळे यांना , देवकी हॉस्पिटलमध्ये त्वरित औषधोपचारासाठी ६ सप्टेंबर रोजी सायंकाळी चार वाजता, भर्ती करण्यात आले. त्यांना बोलायला असमर्थता आणि शरीराच्या उजव्या बाजूला कमकुवतपणाच्या त्रास होता . त्यांची तोंडाची एक बाजू खाली जात होती. आजारपणाचा एकूण कालावधी एक तास होता. स्ट्रोकची शक्यता लक्षात घेता, नातेवाईकांचे समुपदेशन करण्यात आले व उपचारातील साधक आणि बाधक स्पष्टीकरण देण्यात आणि आवश्यक रक्त तपासणीसह त्वरित मेंदूचा एमआरआय स्द्धा करण्यात आला.

एमआरआयने मेंदूच्या रक्तवाहिनीत गुठळी दर्शविली. ही वेळ अशी आहे जेव्हा मेंदूला इजा होण्यास सुरुवात होते आणि मेंदूमधून रक्ताच्या गुठळ्या वेळेवर विरघळले तर रक्त प्रवाह सुरळीत होऊन रुग्ण सामान्य होऊ शकतो. हे तथ्य नातेवाईकांना समजावून सांगण्यात आले आणि त्यांनी औषधीसाठी संमती दिली. .

त्यांना औषध tPA देण्यात आले. अवध्या दोन तासांत रुग्णांमधे उल्लेखनीय सुधाराला सुरुवात झाली. त्याचे आयसीयूमध्ये रात्रभर निरीक्षण केले गेले. सकाळी ते अर्धांगवायू (Hemiplegia) मधे आश्चर्यजनक सुधार दिसलं ते आता नव्वद टक्के बरे झाले होते आणि त्यांनी उजव्या हाताने जेवण केले. औषधासाठी संमती दिल्यामुळे हे शक्य झाले. ही जादूई सुधारणा फक्त तेव्हाच शक्य झाली जेव्हा त्यांनी योग्य वेळेवर औषधोपचार घेतला.

लकवा झाल्या नंतर सोनेरी साडेचार तास असतात. त्यानंतर मेंदूला इजा ज्याल्या मुळे ही औषध उपयुक्त ठरत नाही. आणि नंतर रुग्णाला विकलांगताचा त्रास सहन करावा लागतो

देवकी रूग्णालयाचे संचालक आणि न्यूरोफिझिशियन असलेले डॉक्टर निखिल बोलतात , बहुतेक रुग्ण आणि नातेवाईकांना साडेचार तासांचे सोनेरी क्षणा बद्दल माहिती नाही .हार्ट अटॅक मध्ये तिव्र वेदनामुळे रुग्ण लवकर दवाखाण्यात येतो . लकवा हा वेदनारहीत आजार आहे, म्हणून बहुतांश रुग्णास दवाखान्यात यायला उशीर होतो

पुंडिलिकराव एक उदाहरण आहे की, ज्यांना आधुनिक औषध पद्धती तब्बल 16 तासांत अर्धांगवायू पासून मुक्तता मिळाली. . संपुर्ण जगात , भारतात महानगरांमध्ये आणि अकोला मध्ये पण याचा उपयोग केला जातो. परंतु जागरूकता नसल्यामुळे मोजकेच रुग्ण वेळेवर पोहोचतात.

एका सर्वेक्षण मध्ये डॉ. निखिल यांनी स्ट्रोकच्या सुवर्णकाळात जागरुकता निर्माण करण्याबाबत देवकी रुग्णालयात येण्यारा नाते वाईकांची याच्छिक मुलाखत घेतली. आश्चर्याची गोष्ट म्हणजे 1000 पैकी फक्त 10 लोकांनाच लकवा व सुरवाती चे सोनेरी साडेचार तास बददल मीहिती होती.

डॉ निखिल लकवा ग्रस्त रुग्णास लवकरात लवकर रुग्णालयात जाण्याची व या तथ्याबद्दल जनजागृती करण्याची आपली जबाबदारी मानतात. त्यांनी याकरिता सामाजिक सादरीकरणे, वृत्तपत्रातील लेख व टीव्ही मध्ये मुलाकती दिल्या.. पण ध्येय खूप मोठे आहे, समाजाला लकव्या पासून होणारी विकलांगता पासून मुक्ति, हे ध्येय साध्य करण्यासाठी, त्यांना अधिक तिव्र स्वरुपात कार्य करायचे आहे